कामयाब गिरोह

43

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

सब तारीफ़े अल्लाह तआला के लिये हैं जो सारे जहानों का पालनहार है। हम उसी की तारीफ करते हैं और उसी से मदद और माफी चाहते हैं। अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमतें और बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर, आप की आल व औलाद और असहाब रज़ि. पर। व बअद!

अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया ''यहूदी 71 गिरोह में बंट गए व ईसाई 72 गिरोह में और मेरी उम्मत 73 गिरोह में बट जाएगी। ये सब गिरोह जहन्नम में जांएगे सिवाए एक गिरोह के।'' सहाबा किराम रज़ि. ने पूछा कि ऐ रसूलुल्लाह सल्ल. वह जन्नत में जाने वाला गिरोह कौन सा है? तो आप सल्ल. ने फ़रमाया ''मा अना अलैहि व असहाबि'' यानि जिस (दीन) पर में और मेरे सहाबा हैं। (तिर्मिज़ी–2641, अबुदाऊद–4519–20 सही)

एक दूसरी हदीस में आप सल्ल. का यह फ़रमान है कि ''72 गिरोह दोज़ख में जांएगे और एक गिरोह जन्नत में और यह (कामयाब गिरोह) जमाअत है।'' (मुसनद अहमद–जिल्द 4 सफ़ा–102 हसन)

इसी तरह इब्ने मसऊद रज़ि. से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल. ने एक सीधी लकीर खींची और फ़रमाया ''यह अल्लाह की सीधी राह है। ''फिर आप सल्ल. ने उस लकीर के दांए–बाए कुछ और लकीरें खींची और फ़रमाया ''यह मुख़्तालिफ रास्ते है, हर रास्ते पर शैतान खड़ा है और उस रास्ते की तरफ़ बुलाता है। फिर आप सल्ल. ने कुरआन की यह आयत तिलावत की ''यह मेरा सीधा रास्ता है। बस तुम इसी पर चलो और दूसरे रास्तों पर मत जाओ। वरना तुम उस (अल्लाह) की सीधी राह से हट कर झगड़े में पड़ जाओंगे।'' (अनआम–आयत–153) इस आयत में अल्लाह तआला ने अपनी सीधी राह एक बतलाई है। इसलिए जन्नत की चाह रखने वाले हर शख़्स को चलना भी इसी सीधी राह पर चाहिये था। मगर उम्मते मुस्लिमा इस एक सीधी राह से हटकर कई फ़िर्को और गिरोहों में बंट गई और एक गिरोह को छोड़कर बाक़ी सब गिरोह शैतान की दिखाई राह पर गामज़न हो गये। हर गिरोह दूसरे को ग़लत और गुमराह समझने और कहने में मसरूफ़ हो गया और कामयाब गिरोह की तलाश कर उसमें शामिल होने की फ़िक्र अक्सर को न रही। आइये हम जानने की कोशिश करते हैं कि कामयाब गिरोह कौन सा है? उसका अक़ीदा और तरीक़ा क्या है? यह गिरोह क्यों बाक़ी गिरोहों से अलग और बेहतर है।

कामयाब गिरोह का अक़ीदा है कि सबसे अच्छे लोग नबी सल्ल. के सहाबा थे। उनके बाद ताबईन रह. का दर्जा है और फिर तबअ ताबईन का। क्योंकि आप सल्ल. का इर्शाद है–

''सबसे अच्छे लोग मेरे ज़माने के हैं। फिर उनके बाद आने वाले और फिर उनके बाद आने वाले।'' (बुख़ारी–2652)

कामयाब गिरोह की एक ख़ास पहचान आप सल्ल. ने यह बतलाई कि ये बहुत थोड़े लोग हैं। ''भलाई है उन अजनबी लोगों के लिए जो बुरे लोगों की अक्सरियत में कुछ अच्छे लोग है। जिन को रद्द कर देने वालों की तादाद उनकी बात मानने वालों से बहुत ज़्यादा है।'' (मुसनद अहमद–जिल्द–2 सफ़ा–177 सही)

अल्लाह तआला ने यह भी फ़रमाया ''मेरे बन्दों में से शुक्र गुज़ार बन्दे बहुत कम हैं।'' (सबा–आयत–13)

कामयाब गिरोह वह जमाअत है जो आप सल्ल. और आपके सहाबा किराम रज़ि. के तरीक़े पर चलते है। इसलिए कि आप सल्ल. ने फ़रमाया ''मै तुममें दो चीजें छोड़े जा रहा हूँ। जब तक इन्हें थामें रहोगे। हरगिज गुमराह न होगे। वह दो चीजें अल्लाह की किताब (कुरआन) और मेरी सुन्नत (हदीस) है। ये दोनों कभी अलग न होंगे।''(हाकिम,कुन्जुल उमाल–876)

किसी भी मसअले में इख़्तिलाफ़ के वक़्त यह कामयाब गिरोह अल्लाह के इस हुक्म पर अमल करते हुए किताब व सुन्नत की तरफ़ पलटता है '' अगर किसी बात में तुम्हारे बीच कोई इख़्तिलाफ़ हो जाए तो उसको अल्लाह और उसके रसूल सल्ल. की तरफ़ लौटाओं। अगर तुम वाक़ई अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो।'' (निसा–आयत–59) और इसलिए भी कि '' तेरे रब की क़सम! लोग हरगिज़ ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक कि वो अपने आपसी झगड़ों में (ऐ नबी सल्ल.! तुझे फ़ैसला करने वाला न मान लें। फिर जो तू फैसला कर दे उसके बारे में अपने दिल में तंगी भी मेहसूस न करें बल्कि तेरे फ़ैसले को पूरी तरह (दिल) से तस्लीम कर लें।'' (निसा–आयत–65)

यह गिरोह अल्लाह और उसके रसूल सल्ल. की बात के सिवां किसी के लिए भी तअस्सुब नहीं करता । न ही किसी के हुक्म और फ़तवे को इनके मुक़ाबले तरजीह देता है क्योंकि ''नबी सल्ल. अपनी ख़्वाहिश से नहीं बोलते । बल्कि वह जो कुछ कहते हैं अल्लाह की तरफ़ से वहय होती है। '' (नज्म–आयत–3–4)

और इसलिए भी कि इर्शादे बारी है''ऐ ईमान वालों! अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल.) से आगे न बढ़ों।'' (हुजुरात–01)

''अल्लाह की इताअत करो और उसके रसूल सल्ल. की इताअत करो और (इनके मुक़ाबले में किसी और की बात मानकर) अपने आमाल ज़ाया व बर्बाद न करो।''(मुहम्मद–आयत–33)

यह गिरोह तौहीद का अलम बरदार है। वह इस बात की तालीम देता है कि इबादत व दुआ में सिर्फ़ अल्लाह ही की तरफ़ तवज्जोह करना चाहिये। तंगी और मुसीबत में सिर्फ़ अल्लाह से मदद मांगनी चाहिये। नज़रो–नियाज़ व सदक़ात सिर्फ़ अल्लाह के लिए हों। भरोसा सिर्फ़ अल्लाह पर किया जाए । अल्लाह की नाज़िल की हुई शरीअत के मुताबिक अपने फ़ैसले किये जांए। तमाम तरह की इबादात सिर्फ़ अल्लाह के लिए की जाएं। क़याम, रूकूअ सज्दा भी सिर्फ़ अल्लाह के लिए हो और तवाफ़ भी सिर्फ़ अल्लाह ही के घर का किया जाए और हर तरह के शिर्क से बचा जाए क्योंकि ''शिर्क सबसे बड़ा गुनाह है।''

(लुकमान–आयत–13)
इस गिरोह का यह मानना है कि अक़ाइद वही मोअतबर हैं जो कुरआन व सुन्नत के मुताबिक हैं। कुरआन व सही अहादीस में अल्लाह के जो अस्मा व सिफ़ात (नाम व गुण) बयान हुए हैं उन्हें बिना किसी तावील या तमसील के ज्यों का त्यों माना जाए। क्योंकि ''कोई भी चीज़ उस (अल्लाह) के जैसी नहीं है और वह देखने–सुनने वाला है।'' (शूरा–आयत–11) मगर उसका देखना और उसका सुनना हमारे देखने और सुनने जैसा नहीं।

यह गिरोह दूसरे कुछ गुमराह गिरोहों की तरह अल्लाह को बज़ाता हर जगह मौजूद मानना, रसूल सल्ल. को आलिमुल ग़ैब व हाज़िर व नाज़िर मानना, आप सल्ल. की बशरियत का इन्कार करना और आप सल्ल. को 'नूरुम मिन नूरिल्लाह' समझना जैसे शिर्किया अक़ाइद से पाक है। इसी तरह सुफिया की तरफ़ से तरीक़त के नाम पर जो शिर्क व बिदअत फैलाया जाता रहा है जैस–क़ब्रों से फ़ैज़ हासिल करना, अक़ीदा हुलुल, (यानि अल्लाह का किसी बन्दे के जिस्म में दाखि़ल होना) वहदतश्शहूद (किसी इन्सान का अल्लाह की ज़ात में मिल जाना) वहदतुल वुजूद (कायनात की हरशै में अल्लाह को मौजूद समझना) और तसव्वुरे–शैख़ जैसे मुश्रिकाना अक़ाइद का इन्कार करता है।
यह गिरोह सिर्फ़ शरई तवस्सुल पर यकीन रखता है जिसका अल्लाह ने हुक्म दिया है या जिसे आप सल्ल. ने बतलाया है और सहाबा रज़ि.ने जिस पर अमल किया है। रहा. ग़ैर शरई तवस्सुल (वसीला) जिसे बाद के लोगों ने ईजाद किया है। जैसे अपनी दुआओं मे आप सल्ल. की ज़ाते अक्दस को वसीला बनाना। या इस तरह दुआ करना कि या अल्लाह!नबी सल्ल. के सदके़ मेरी दुआ कुबूल फ़रमा, को बिदअत मानता है। अपनी दुआओं में फ़ौत हो चुके बुज़ुर्गो को वसीला बनाना जो कि शिर्के अकबर है से बराअत व बेज़ारी ज़ाहिर करता है। यह गिरोह सभी मुसलमानों को जिहाद की तरफ़ दावत देता है इसलिए के जिहाद हर मुस्लमान पर उसकी ताक़त के मुताबिक़ फ़र्ज़ है। आप सल्ल. का फ़रमान है ''तुम में से जो कोई भी मुन्किर बात देखे तो उसे चाहिये कि उसे हाथ से मिटा दे। अगर इसकी ताक़त न हो तो ज़ुबान से बुरा कहे ओर अगर इतनी भी ताक़त न हो तो उसे दिल से बुरा जाने और (यह दिल से बुरा जानना) ईमान का सबसे कम दर्जा है।'' (मुस्लिम 49, नसाई–5011, तिर्मिज़ी–2173)
इसी लिए यह गिरोह भलाई का हुक्म देता है और बुराईयों से रोकता है। यह गिरोह तमाम मुसलमानों को दावत देता है कि अल्लाह के रसूल सल्ल. और खुलफा ए राशेदीन की सुन्नत (तरीके़) को मज़बूती से थाम लें। रोज़ाना पांच वक्त नमाज़ बा जमाअत क़ायम करें क्योंकि जो नमाज़ नहीं पढ़ता। वह अल्लाह और उसके रसूल सल्ल. के नज़दीक काफ़िर ठहरता है। यह भी मानता है कि नमाज़ की कुबूलियत के लिए ज़रूरी है कि नमाज़ सुन्नते रसूल. के मुताबिक अदा की जाए। यह गिरोह लोगों के गढ़े हुए उन तमाम क़ानूनों का इन्कार करता है जो इस्लामी अहकामात के खि़लाफ़ है। यह गिरोह तमाम बिदअती मज़ाहिब का भी इन्कार करता है, जिन्होंने मुसलमानों को गिरोहों में बांट दिया है।
इस गिरोह के लोग अपनी या किसी और की राय व क़यास को दीन नहीं बनाते

बल्कि किताबों सुन्नत की तरफ़ रूजूअ करते है। अपनी इबादात, हुस्ने सुलुक और अपनी ज़िन्दगी के तमाम मामलात में रसूल सल्ल. की सुन्नतों को ज़िन्दा करते हैं। जिसकी वजह से अपने ही लोगों में अजनबी बनकर रह जाते है। ऐसे ही लोगों के बारे में आप सल्ल. का इर्शाद है।''इस्लाम शुरू में अजनबी था और आने वाले वक़्त में उसी तरह अजनबी हो जाएगा। लिहाज़ा उन अजनबियों के लिए ख़ुशख़बरी है'' (मुस्लिम–145)

एक और रिवायत में है ''मुबारक है वो अजनबी लोग जो मेरी उस सुन्नत की इस्लाह करते हैं। जिसको लोग (तहरीफ़ करके) ख़राब कर देते हैं।'' (तिर्मिज़ी–2630)

आप सल्ल. की यह पेशेनगोई आज बिल्कुल सही साबित हो रही है। क्योंकि आज इस गिरोह का कोई शख़्स जब समाज के रस्मों रिवाज और ख़ानदान व बिरादरी के तौर–तरीकों को छोड़कर ख़ालिस दीन (कुरआन व हदीस) पर अमल करने लगता है। तो अपने ही लोगों में बेगाना बन जाता है। यूनानी, फलसफ़े तसव्वुफ़, बिदअत, शिर्क, अन्धी, तक़लीद और रस्मो–रिवाज वग़ैरह ने दीने इस्लाम के साफ़ सुथरे चेहरे को धुंधला कर दिया है। आम मुसलमान ख़ालिस दीन से कोसों दूर चले गए हैं। अहले बिदअत को अहले सुन्नत समझा जाता है और असली अहले सुन्नत को गुमराह कहा जाता है। इस सब के बावजूद इस गिरोह का हर शख़्स अपनी ताक़त भर आप सल्ल. की सुन्नतों को ज़िन्दा करने की कोशिशों में मसरूफ रहता है।

कामयाब गिरोह से मुराद

आप सल्ल. ने फ़रमाया '' मेरी उम्मत में से एक गिरोह हमेशा अल्लाह के हुक्म पर क़ायम रहेगा। जो कोई उन्हें बिगाड़ना चाहे या उनकी मुख़ालिफ़त करे। वह उन्हे कुछ नुक़्सान न पहुंचा सकेगा। यहां तक कि अल्लाह का हुक्म (क़यामत) आ जाए और वह लोगों पर ग़ालिब ही रहेगा।'' (बुख़ारी–3640–41, मुस्लिम–1923)

''मेरी उम्मत मे से एक गिरोह हमेशा हक़ पर क़ायम रहेगा और अल्लाह की मदद उसके साथ होगी। इस गिरोह की मुख़ालिफ़त करने वाले उसका कुछ न बिगाड़ सकेंगे। यहां तक कि क़यामत आ जाए।'' (इब्ने माजा–10)

इस गिरोह से मुराद कौन लोग हैं? अइम्मा किराम रह. से जानते हैं (1) इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह. फरमाते है'' मेरे नज़दीक वो अहले हदीस हैं।'' (शर्फ़ अस्हाबुल हदीस)

2. इमाम यज़ीद बिन हारून रह. कहते हैं ''अगर वो अहले हदीस नहीं तो मैं नही जानता कि वो और कौन हैं?('')

3. इमाम अली बिन मदीनी रह. की नज़र में ''वो अहले हदीस हैं।'' (तिर्मिज़ी)

4. इमाम अहमद बिन हम्बल रह. कहते हैं'अगर इस गिरोह से मुराद असहाबुल हदीस नहीं तो मैं नहीं जानता कि यह कौन लोग हैं? (नौवी–शरह सही मुस्लिम)

5. इमाम बुख़ारी रह. फ़रमाते हैं'' यह गिरोह अहलुल हदीस है।''(शर्फ़ असहाबुल हदीस)

6. शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह. फरमाते हैं अहले सुन्नत वल जमाअत ही

कामयाब गिरोह है और अहले सुन्नत का एक ही नाम है'' अहले हदीस।'' (गुन्या–जिल्द–सफ़ा) ध्यान रहे यहां अहले हदीस से मुराद उन लोगों का गिरोह है जो कुरआने करीम और सही अहादीसे रसूल सल्ल. के बयान कर्दा अहकामात के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता है। यह गिरोह कुरआनी आयात या सही अहादीसे रसूल सल्ल. के ख़िलाफ़ किसी भी उम्मती के क़ौल व अमल और फ़तावों को तरजीह नहीं देता।

इस गिराह को बुरा कहने वाला बिदअती व बेदीन है

इमाम अहमद बिन सनान अल क़तान रह. ने फ़रमाया''दुनिया में कोई बिदअती ऐसा नहीं जो अहले हदीस से दुश्मनी न रखता हो और जब कोई शख़्स बिदअत ईजाद करता है तो उसके दिल से हदीस की हलावत (मिठास) छीन ली जाती है।'' (शर्फ़ असहाबुल हदीस)

इमाम अहमद बिन हम्बल रह. को बताया गया कि मक्का में इब्ने क़तीला से कुछ लोगों ने अहले हदीस का ज़िक्र किया तो उसने कहा कि अहले हदीस बुरी क़ौम है। (यह सुनते ही) इमाम अहमद इब्ने हम्बल रह. ने फ़रमाया कि वह शख़्स (जिसने अहले हदीस को बुरा कहा है) बेदीन है, बेदीन है, बे दीन है।'' (शर्फ़ असहाबुल हदीस)

अहले हदीस नया गिरोह नहीं हैं

यह गिरोह हर सदी और हर दौर में रहा हैं और इसने हमेशा लोगों को ख़ालिस कुरआन व सुन्नते रसूल सल्ल. (हदीस) की तरफ़ बुलाया है। कुरआने करीम और हदीसे नबवी सल्ल. सिर्फ़ यही दो चीजे़ इस गिरोह की बुनियाद व असल हैं। आप सल्ल. के तमाम सहाबा रजि़. अहले हदीस थे। हज़रत अबु सईद खुदरी रजि़. अपने शागिर्दो से फ़रमाया करते थे ''हमारे बाद तुम ताबई लोग अहले हदीस हो।'' (शर्फ़ लिल ख़तीब)

इमाम शअबी रह. जो मशहूर इमाम और ताबई हैं। उन्होंने पांच सौ सहाबा रजि़. को देखा और सब को अहले हदीस कहा है।(तज़किरतुल हुफ़्फ़ाज़–लिज़्ज़बी)

इमाम सुफ़यान सौरी रह. फ़रमाते हैं'' फरिश्तें आसमान के और अहले हदीस ज़मीन के चौकीदार है।''

इमाम मुस्लिम रह. कहते हैं''इमाम अय्युब सख़्तयानी, इमाम मालिक, इमाम शअबा, यह या बिन सईद अल क़तान, अब्दुर्रहमान बिन मैहदी रह. और उनके बाद वाले अहले हदीस थे।'' (मुस्लिम)

इमाम इब्ने तीमिया रह. कहते हैं'' इमाम शाफ़ई रह. और इमाम अहमद रह. गिरोह अहले हदीस में से थे।'' (मिन्हाजुल सुन्नः)

रसूल सल्ल. इस गिरोह के इमाम है

यह गिरोह वह जमाअत है जो मुहम्मदुर्रसूलूल्लाह सल्ल. को काफ़ी समझता है और आप सल्ल. के मुक़ाबले में किसी और को इमाम नहीं बनाता। इस गिरोह के नज़दीक मुहम्मद सल्ल. को छोड़कर किसी और को इमाम बनाना आप सल्ल. से गद्दारी करने जैसा है। यह कितनी अजीब बात है कि कलमा तो मुहम्मद सल्ल. का पढ़ा जाए और इमाम किसी और को बना दिया जाए। मुहम्मद सल्ल.जो अल्लाह के सच्चे और आख़िरी रसूल है। जिन्हें खुद अल्लाह ने

उम्मत के लिए बतौर इमाम व हादी मबऊस किया।जिन की जिन्दगी एक बेहतरीन नूमना है। जो हस्ती मासूम अनिल खता थी, जिस पर अल्लाह की वहय उतरती थी, जिसने मेअराज की रात तमाम अम्बिया अलैहि. की इमामत की। यह गिरोह उन्हें छोड़कर खुद साख्ता इमामों से अपनी निस्बत नहीं जोड़ता।

इस गिरोह के लिए नबी सल्ल. की दुआए रहमत

इब्ने अब्बास रज़ि. का बयान है कि मैंने अली रज़ि. को यह फ़रमाते हुए सुना कि आप सल्ल. ने इस तरह दुआ की ''ऐ अल्लाह! मेरे ख़लीफ़ों पर रहम फ़रमा।'' हमने कहा ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल.! आप के ख़लीफ़ा कौन लोग हैं ? तो आप सल्ल. ने फ़रमाया ''वो लोग जो मेरे बाद आएंगे और मेरी अहादीस व सुनन बयान करेंगे और लोगों को सिखाएंगे।'' (तबरानी–मुअजम अल औसत–5846)

इस गिरोह के लोग तमाम बुजुर्गानेदीन, फुकहा और अइम्मा किराम का दिल से एहतेराम करते हैं। लेकिन उनके क़ौल व फ़तावों को आसमानी वहय की तरह नहीं मानते कि जिसमें नज़रे सानी करना कुफ़्र हो और न ही उन्हें नबी सल्ल. की तरह ख़ताओं से पाक समझते हैं बल्कि उनके कुरआन व सुन्नत के खिलाफ़ अक़वाल को उनकी बशरी कमज़ोरियों और भूल–चूक का नाम देते हैं और उनके सही इज्तेहाद की क़द्र करते हैं। पूरी उम्मते मरहूमा के बुजुर्गानेदीन से मुहब्बत करते हैं और उनसे दुश्मनी को ईमान से हाथ धोना समझते हैं। उन्हें गालियां देने वाले और बुरा कहने वाले को गुनाहगार मानते हैं।

इस गिरोह के लोग किसी उम्मती की अन्धी तक़लीद करने के बजाए इत्तेबाए रसूल सल्ल. करते है। हिदाया के बजाए कुरआन की तरफ़ बुलाते है। कुदूरी व दुर्रे मुख़्तार के बजाए सही बुख़ारी व सही मुस्लिम को पढ़ने की तरफ़ लोगों को रागिब़ करते है। मुल्क में फ़तावा आलमगीरी के बजाए कुरआन व सुन्नत के निफ़ाज की चाहत रखते हैं। बिदअत के बजाए सुन्नते रसूल सल्ल. और शिर्क के बजाए तौहीद का दर्स देते हैं और चाहते हैं कि उम्मते मुस्लिमा तो शिर्क से महफ़ूज रहे।

मौलाना अब्दुल हई लखनवी हनफ़ी रह. फ़रमाते है ''मैने जब भी इख़्तिलाफी मसाइल में तहक़ीक की है तो मुझे मुहद्दिसीन का मज़हब ही सही नजर आया वो लोग कितने अच्छे हैं कि अल्लाह भी उनकी कोशिशों को पसन्द करता है और ऐसा क्यों न हो जबकि वो अल्लाह के रसूल सल्ल. के सच्चे जानशीन हैं और शरीअते इस्लामी के फ़ैलाने में आप सल्ल. के नायब हैं। अल्लाह हमेंउनके गिरोह में (क़यामत के रोज़) उठाये और उनकी मोहब्बत व सीरत पर हमारी मौत हो।'' (इमामुल कलाम)

हमारी भी दुआ है कि अल्लाह हमें कामयाब (जन्नती) गिरोह में शामिल फ़रमाए। सही अहादीस पर अमल करने की तौफ़ीक़ दे। शिर्क व बिदआत से दूर रखें और कलमा ए तौहीद पर हमारी वफ़ात हों।

आमीन या रब्बल आलमीन!

आपका दीनी भाई

मुहम्मद सईद

दिनांक. 15/02/12